5 जून 2022
मूल्य : 5.00 रुपये

समरसता के महान सन्त
कबीरदास जी को शत शत नमन

मालवा-निमाड़

जाग्रत मालवा

पंजीयन क्रमांक : MPHIN36496

मासिक जागरण पत्रिका

ज्ञानवापी ~~मस्जिद~~ नही मन्दिर ही है

भोजशाला से ज्ञानवापी तक न जाने कितने नंदी प्रतीक्षा में हैं?

Azadi Ka Amrit Mahotsav

SHAKTI®
PUMPING LIFE

सूर्य ही नई शक्ति

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

सौर ऊर्जा का उपयोग एवं अपार फ़ायदों को सभी जानते है, और इसलिये हर जगह एवं हर क्षेत्र में इसका अस्तित्व दिखने लगा है. अब सौर ऊर्जा का उपयोग उद्योगों के साथ साथ घरेलु बिजली के उपयोग में भी होने लगा है.

शक्ति पत्पस् ने शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम को विकसित किया है.

MRP 29500/-

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

- 150 वॉट का एक सोलर पेनल
- लिथीयम एंड फास्फेट (LFP) बैटरी 60 Ah
- MPPT चार्ज कंट्रोलर 20 A
- डीसी सिलिंग फैन
- 02 व्हाईट एलईडी बल्ब 6 वॉट

विशेषताएं

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम में एक बार का निवेश जो आपको साल–दर–साल फायदा पहुंचाएं.

- बिजली के बिल में कमी
- लम्बे समय तक चले
- भरोसेमंद एवं बाधा रहित परफॉर्मेंस
- रख–रखाव एवं चलाना आसान
- पर्यावरण–अनुकूल
- प्रचुर मात्रा में उपलब्धता
- परंपरागत ऊर्जा के स्त्रोतों पर निर्भरता से मुक्त
- सरल संचालन
- लिथियम बैटरी की लाईफ अन्य सामान्य बैटरी की तुलना में अधिक है एवं यह बहुत जल्दी चार्ज होती है.

सोलर कंट्रोलर की विशेषताएं

- HIGH PERFORMANCE CHIP
- MULTIPLE PROTECTION
- AUTOMATIC RECOGNITION
- LIGHT EFFICIENCY TIME CONTROL
- PWN CHARGE
- SIMPLE INSTALLATION

कार्यप्रणाली

India : Toll Free No. 1800 103 5555

शक्ति पम्पस् (इंडिया) लिमिटेड

सेक्टर – 3, औद्योगिक क्षेत्र, पीथमपुर, जिला–धार (म.प्र.) – इंडिया फोन.: +91-7292-410500
ई–मेल: info@shaktipumps.com, वेब: www.shaktipumps.com. टोल फ्री नं.: **1800 103 5555**

* नियम व शर्तें लागू

जाग्रत मालवा
इन्दौर दिनांक 5 जून 2022 मासिक जागरण पत्रिका

मासिक जागरण पत्रिका
शीर्षक (टाईटल) पंजीयन MPHIN36496
वर्ष : 01 अंक : 11
...
ज्येष्ठ-शुक्ल
युगाब्द ५१२४

प्रधान संपादक
देवकृष्ण व्यास
संपादक
अरुण सपकाले
संपादक मंडल
डॉ. सुब्रतो गुहा
डॉ. सोनाली नरगुन्दे
डॉ. रत्नदीप निगम
डॉ. उत्तम मीणा
अशोक वर्मा

...
मुख्य कार्यालय
जाग्रत मालवा
जी-1, केसरदीप एवेन्यू
72, नारायण बाग, इन्दौर (म.प्र.)
पिन कोड : 452007
फोन : 0731-3551341
...
Email :
jagrutmalwa@gmail.com
jagrutmalwa

स्वामी – विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11/डी पोलोग्राउंड इंदौर म.प्र. से मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जी-1, केसरदीप एवेन्यु इन्दौर म.प्र. से प्रकाशित। संपादक अरुण सपकाले
फोन नं. 0731-3551341

अपनी बात

ॐ

सत्यम् शिवम् सुन्दरम् यह सनातन सत्य है। आतताइयों ने इस सत्य पर ग्रहण लगाने का काम किया, आज भी उनके अनुयायी इस सत्य को भुलाने का असफल प्रयास कर रहे हैं। वह समय कुछ और था, वर्तमान कुछ और। अब देश का हिन्दू समाज जाग गया है। इतिहास में जो भी अन्याय उसके साथ हुआ है वह उसकी सहन-शक्ति के बाहर हो गया है। वह ऐतिहासिक भूलों को सुधारना चाहता है। अदालत के संज्ञान में लाकर संवैधानिक हल चाहता हैं। सारे प्रमाण मौजूद है जिनका न्यायोचित परिणाम चाहता है। आज नहीं तो कल इसका सुखद परिणाम आयेगा ही। इसी से डरकर कुछ लोग झूठे प्रलाप कर रहे हैं।

एक ही नहीं अनेक स्थानों पर मन्दिर तोड़कर मस्जिदों का निर्माण हुआ है। पत्थर-पत्थर बोल रहा है। लेकिन कुछ लोग पहले भी पत्थर दिल थे और आज भी। लोगों को भ्रम फैलाकर झूठ को सत्य बताया जा रहा है। लेकिन सत्य हमेशा सत्य होता है जो सर्व विदित है। कुछ लोग अभी भी औरंगजेबी एजेन्डा इस स्वतंत्र राष्ट्र पर थोपना चाहते हैं। अब समय आ गया है हमारे मान बिन्दुओं की रक्षा करने का। जन-जन यही चाहता है अब इतिहास की काली करतूतों को सबके सामने उजागर कर उस कालिख को मिटाना चाहिए।

आक्रोश नहीं शान्ति के साथ हल चाहते हैं, किन्तु कुछ तत्व इस मुद्दे को राजनैतिक लाभ उठाने के लिए किसी स्तर तक उतर कर इसका विरोध कर रहे हैं। ऐसा ही विरोध रामजन्मभूमि के मुद्दे पर हुआ था लेकिन सत्य को विजय मिली। काशी विश्वनाथ हो, कृष्ण जन्म भूमि हो, वह दिन दूर नहीं जब सत्य की विजय होगी।

अपने मालवा में भी धार में माँ वाग्देवी सरस्वती का मन्दिर भोजशाला मुक्ति एवं गौरवपूर्ण पुनर्स्थापन के लिए प्रतीक्षारत है। भारत की सांस्कृतिक, आध्यात्मिक धरोहर राजा भोज द्वारा स्थापित भोजशाला आज भी मुक्त नहीं है। वहाँ का भी पत्थर-पत्थर मुक्ति के लिए हम सबको बार-बार पुकार रहा है। आज भी माँ वाग्देवी सात समन्दर पार लन्दन में हम समस्त भारतीयों की प्रतीक्षा कर रही है।

मन्दिर तोड़ बनाई मस्जिद, इतिहास गवाही देता है
पत्थर-पत्थर बोल रहा है, सत्य कहानी कहता है।

काशी विश्वनाथ का ज्ञानवापी मंदिर

पुराणों के अनुसार, ज्ञानवापी की उत्पत्ति तब हुई थी जब धरती पर गंगा नहीं थी और इंसान पानी के लिए बूंद-बूंद तरसता था। तब भगवान शिव ने स्वयं अपने अभिषेक के लिए त्रिशूल चलाकर जल निकाला। यहां पर भगवान शिव ने माता पार्वती को ज्ञान दिया। इसीलिए, इसका नाम ज्ञानवापी पड़ा और जहां से जल निकला उसे ज्ञानवापी कुंड कहा गया। ज्ञानवापी का उल्लेख हिंदू धर्म के पुराणों मे मिलता है तो फिर ये मस्जिद के साथ नाम कैसे जुड़ गया?

वापी का अर्थ होता है तालाब। ज्ञानवापी का सम्पूर्ण अर्थ है ज्ञान का तालाब। काशी की छः वापियों का उल्लेख पुराणों मे भी मिलता है।

पहली वापी- ज्येष्ठा वापी, जिसके बारे मे कहा जाता है कि ये काशीपुरा में थी, अब लुप्त हो गई है। **दूसरी वापी**- ज्ञानवापी, जो काशी विश्वनाथ मंदिर के उत्तर में है। **तीसरी वापी** - कर्कोटक वापी, जो नागकुंआ के नाम से प्रसिद्ध है। **चौथी वापी** - भद्रवापी, जो भद्रकूप मोहल्ले में है। **पांचवीं वापी** - शंखचूड़ा वापी, लुप्त हो गई। **छठी वापी**- सिद्ध वापी, जो बाबू बाजार में है और अब लुप्त हो गई।

अठारह (18) पुराणों में से एक लिंग पुराण में कहा गया है-
'देवस्य दक्षिणी भागे वापी तिष्ठति शोभना।
तस्यात वोदकं पीत्वा पुनर्जन्म ना विद्यते।'

इसका अर्थ है - प्राचीन विश्वेश्वर मंदिर के दक्षिण भाग में जो वापी है, उसका पानी पीने से जन्म-मरण से मुक्ति मिलती है। स्कंद पुराण में भी ज्ञानवापी का वर्णन है और ज्ञानवापी के जल को भगवान शिव का स्वरूप बताया। ज्ञानवापी का जल भगवान शिव का ही स्वरूप है।

वे पुराण, कह रहे हैं कि ज्ञानवापी हिंदुओं से जुड़ा हुआ है लेकिन आज 2022 में आप सुनते हैं कि मस्जिद का नाम है ज्ञानवापी मस्जिद । लेकिन मुस्लिम आक्रांताओं के आक्रमणों ने काशी के मंदिरों को कई बार नष्ट किया। मुहम्मद गोरी ने कुतुबुद्दीन ऐबक को बनारस विजय के लिए भेजा। कुतुबुद्दीन ऐबक के हमले में बनारस के 1000 से भी अधिक मंदिर तोड़े गए और मंदिर की संपत्ति, कहा जाता है कि 1400 ऊंटों पर लादकर मोहम्मद गोरी को भेज दी गई। बाद में कुतुबुद्दीन को सुल्तान बनाकर, गोरी अपने देश वापिस लौट गया।

कुतुबुद्दीन ऐबक ने बनारस में शासन के लिए 1197 में एक अधिकारी नियुक्त किया था। बनारस में ऐबक के शासन ने बड़ी कड़ाई के साथ मूर्तिपूजा हटाने की पूरी कोशिश की। इसका नतीजा ये हुआ कि क्षतिग्रस्त मंदिर वर्षों तक ऐसे ही पड़े रहे क्योंकि इन्होंने ऐसा तोड़ा और ऐसा इनका राज चलता था कि किसी की हिम्मत ही नहीं हुई कि इन मंदिरों को फिर से बनाए। लेकिन 1296 आते-आते, बनारस के मंदिर फिर से बन गए और फिर से काशी की शोभा बढ़ाने लगे। बाद मे अलाउद्दीन खिलजी के समय, बनारस के मंदिर फिर से तोड़े गए। 14वीं सदी में जौनपुर में शर्की सुल्तानों ने पहली बार, काशी विश्वनाथ मंदिर को तुड़वाया। 15वीं सदी में सिकंदर लोदी के समय भी बनारस के सभी मंदिरों को फिर से तोड़ा गया। वर्षों तक मंदिर खंडहर ही बने रहे।

16वीं सदी में अकबर के शासन में उनके वित्त मंत्री टोडरमल ने अपने गुरु नारायण भट्ट के आग्रह पर 1585 में विश्वेश्वर का मंदिर बनवाया जो कि यही काशी विश्वनाथ का मंदिर है। टोडरमल ने विधिपूर्वक, विश्वनाथ मंदिर की स्थापना ज्ञानवापी क्षेत्र में की। लेकिन उस भव्य मंदिर को औरंगजेब के शासनकाल में फिर से तोड़ दिया गया।

1669 में औरंगजेब ने बनारस के सभी मंदिरों को तोड़ने का फरमान दे दिया था, जिसके बाद विश्वेश्वर मंदिर पर जो मस्जिद बनी उसे ज्ञानवापी मस्जिद कहा जाता है।

काशी विश्वनाथ मंदिर के 16वीं सदी का पुराने नक्शे में कहीं भी मस्जिद का कोई भी जिक्र नहीं है। नक्शे को 1820-1830 के बीच ब्रिटिश अधिकारी James Princep ने तैयार किया था। इसमें कहीं भी मस्जिद का जिक्र नहीं हैऔर इस नक्शे के मुताबिक मंदिर प्रांगण के चारों कोनों पर तारकेश्वर, मनकेश्वर, गणेश और भैरव मंदिर दिख रहे हैं। बीच का हिस्सा गर्भगृह है जहां शिवलिंग स्थापित है और उसके दोनों तरफ शिव मंदिर भी दिखते हैं।

अब अगर आज की तारीख में आप जाइएगा, तो शिवलिंग, मस्जिद परिसर के अंदर दिखता है। अब सवाल यह उठता है कि नंदी जी मस्जिद की तरफ क्यों देख रहे हैं जबकि काशी विश्वनाथ मंदिर तो उनके पीछे स्थित है। नंदी जी तो सदैव शिवलिंग की तरफ ही देखते हैं।

दावा यह भी किया जाता है कि जब औरंगजेब ने मंदिर तोड़ने के बाद वहीं पर मस्जिद बनाने का फरमान दिया था तब मंदिर के गर्भगृह को ही मस्जिद का मुख्य कक्ष बनाने की योजना बनाई गई थी। इस योजना के अनुसार पश्चिम के दोनों छोटे मंदिर और श्रंगार मंडप तोड़ दिए गए और गर्भगृह का मुख्य द्वार जो पश्चिम की तरफ था उसे चुन दिया गया। ऐश्वर्य मंडप और मुक्ति मंडप के मुख्य द्वार बंद कर दिए गये और मंदिर का यही भाग, मस्जिद की पश्चिमी दीवार बन गया।
मंदिर की पश्चिमी दीवार को ऐसे ही टूटी स्थिति में रख दिया क्योंकि औरंगजेब चाहता था कि हिन्दू समाज को नीचा महसूस हो। जब मंदिर तोड़ा गया उसके मलबे को भी वहीं पड़े रहने दिया गया। दीवारें, आज भी वैसी ही हैं। ज्ञानवापी कुंड का जिक्र, पंचकोसी परिक्रमा में भी है । औरंगजेब के मंदिर तुड़वाने के 125 साल बाद इसका पुनर्निर्माण इंदौर की महारानी अहिल्याबाई ने करवाया था।

1777 में महारानी अहिल्याबाई ने ज्ञानवापी के बगल में दोबारा विश्वनाथ मंदिर बनवाया। 1828 के आसपास, नेपाल के राजा ने मंदिर परिसर में नंदी की स्थापना करवाई। इसके बाद, महाराजा रणजीत सिंह ने मंदिर के शिखर को सोने से मढ़वाया था। ये सब अभी वाला जो आप काशीविश्वनाथ मंदिर देखते हैं, उसके बारे में बताया जा रहा है।

एक इतिहास यह भी है कि 18वीं सदी के दौरान मराठा सरदार मल्हार राव ने काफी कोशिश की थी कि ज्ञानवापी मस्जिद की जगह मुस्लिम ,वाजिब मुआवजा लेकर, विश्वनाथ मंदिर फिर बनवा दें लेकिन अंग्रेज, मस्जिद तोड़कर मुस्लिम समाज को नाराज नहीं करना चाहते थे।

काशी विश्वनाथ मंदिर और ज्ञानवापी मस्जिद का मामला 1936 में कोर्ट भी पहुंचा था। तब मुस्लिम पक्ष ने पूरे परिसर को मस्जिद करार देने की अपील भी की थी। 1937 में वाराणसी जिला अदालत ने मुस्लिम पक्ष की अपील को खारिज करते हुए कहा था कि ज्ञानकूप के उत्तर में ही भगवान विश्वनाथ का मंदिर है क्योंकि कोई दूसरा ज्ञानवापी कूप बनारस में नहीं है। जज ने ये भी लिखा कि एक ही विश्वनाथ मंदिर है जो ज्ञानवापी परिसर के अंदर है। इतिहासकार अनंत सदाशिव अलतेकर ने 1937 में एक किताब प्रकाशित की है 'हिस्ट्री ऑफ बनारस'। इसमें भी कहा गया है कि मस्जिद के चबूतरे पर स्थित खंबों और नक्काशी को देखने से प्रतीत होता है कि ये 14वीं-15वीं शताब्दी के हैं। प्राचीन विश्वनाथ मंदिर में ज्योतिर्लिंग 100 फीट का था। अरघा भी 100 फीट का बताया गया है। ज्योतिर्लिंग पर गंगाजल, बराबर गिरता रहा है, जिसे पत्थर से ढक दिया गया। यहां, श्रृंगार-गौरी की पूजा-अर्चना होती है। तहखाना यथावत है, ये खुदाई से स्पष्ट हो जाएगा।

विश्वनाथ मंदिर, बार-बार गिराए जाने का उल्लेख, विद्वान नारायण भट्ट ने अपनी किताब **'त्रिस्थली सेतु'** में भी किया है। ये किताब संस्कृत में 1585 में लिखी गई थी।

इतिहासकार डॉ. मोतीचंद ने अपनी किताब **'काशी का इतिहास'** मे लिखा है कि औरंगजेब के समय मंदिर को गिराकर ज्ञानवापी मस्जिद का निर्माण कराया गया है। मस्जिद बनाने वालों ने पुराने मंदिर की पश्चिमी दीवार गिरा दी और छोटे मंदिरों को जमीदोंज कर दिया। पश्चिमी, उत्तरी और दक्षिणी द्वार भी बंद कर दिए गए। द्वारों पर उठे शिखरों को गिरा दिया गया और उनकी जगह पर गुंबद खड़े कर दिए गए। गर्भगृह मस्जिद के मुख्य दालान में परिणित हो गया। चारों अंतरगृह बचा लिए गए और उन्हें मंडपों से मिलाकर 24 फुट दालान निकाल दी गई। मंदिर का पूर्वी भाग तोड़कर एक बरामदे में बदल दिया गया।

इसमें अब भी पुराने खंभे लगे हैं। मंदिर का पूर्वी मंडप, जो 125×35 फुट का था, उसे एक लंबे चौक में बदल दिया गया। **'तीन चीजें ज्यादा देर तक छिपी नहीं रह सकतीं 'सूर्य, चंद्रमा और सत्य' - भगवान बुद्ध ।**
शिव ही सत्य हैं।
नंदी महाराज का वर्षों का इंतजार खत्म हुआ, बाबा मिल गए।

समरसता के महान संत कबीरदासजी

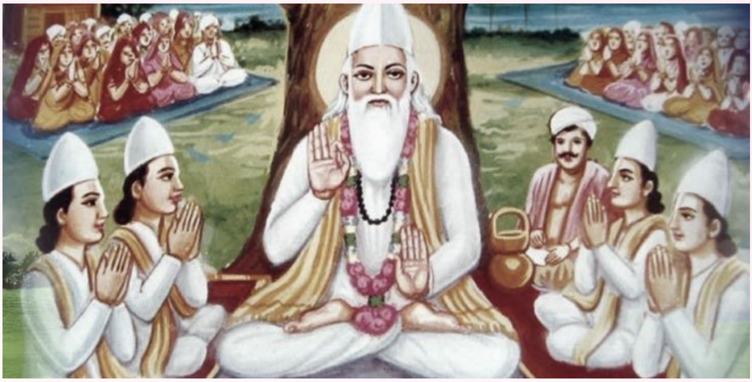

भारत में समाज को समरस बनाने हेतु कई महान संतों ने जन्म लिया है ऐसे संत जिन्होंने मनुष्यों को ना केवल सही ढंग से रहना सिखाया अपितु, जात-पात, अमीरी-गरीबी जैसे झूठे आंडबरों पर कड़ा प्रहार किया। इन सभी साधु-सन्तों में जो उच्च नाम है वो है संत कबीरदासजी का। संत कबीर दास सिर्फ एक साधु नहीं थे अपितु वो ऐसे समाज सुधारक थे जिन्होंने समाज की कुरितियों के खिलाफ आवाज बुलंद की। कबीर दास जी का जन्म विक्रम संवत 1455 ज्येष्ठ माह की पूर्णिमा को माना जाता है। कहा जाता है कि कबीर दास जी का जन्म बनारस के जुलाहा दंपत्ति के घर हुआ था, किन्तुं कुछ लोगों को मानना है कि कबीर जी ने जन्म नहीं लिया था बल्कि वो प्रकट हुए थे इसलिए कबीर जंयती को उनका 'प्रकट्य दिवस' मानकर भी मनाया जाता है। संत कबीर जी को बहुत ही कम आयु में अध्यात्मिक ज्ञान हो गया था। उन्होंने कभी शिक्षा ग्रंहण नहीं कि लेकिन फिर भी वो चारों वेदों के ज्ञाता थे। उनमें ज्ञान का अपार भंडार था। कबीर जी के जीवन में सबसे बड़ा बदलाव तब आया जब 15 वीं शताब्दी में उनके गुरु रामानन्द जी ने उनकी अद्भुत शक्ति देख उनके नाम के साथ दास जोड़ दिया। कबीर अब संत कबीर दास कहलाने लगे थे।

उनके समय में समाज, जात-पात, ऊँच-नीच जैसे कुरीतियों के बीच जी रहा था। कबीर दास जी को किसी एक श्रेणी में रखना मुश्किल है उनकी कविताओं, पद्यो और छंदो में एक से अधिक भाषाओं का संगम रहा जिसे 'खिचड़ी' भी कहा जाता है। वो हर भाषा का प्रयोग कर लिखते थे उनका मानना था कि शिक्षा की कोई भाषा नहीं होती। उनके लिए ग्रंथ बहुत ही सुंदर और भावनाओं से भरे हुए होते थे।आजीविका के लिए बुनाई का काम किया करते थे। वो ज्यादातर समय अपनी कुटीया में ही व्यतीत करते थे। उन्होंने हिन्दू, मुस्लिमों पर इस तरह अपना जादू फैलाया था कि हर कोई उन्हें अपना समझता था।

समाज को उसकी कमी बताकर समरस करने का उनका प्रयास उनके दोहो और छंदों में प्रकट होता था। जातिगत भेदभाव पर चोंट करता उनका एक दोहा...

ऊँचे कुल का जनमियां, करनी ऊँची न होय।
सुवर्ण कलश सुरा भरा, साधु निंदा होय।।

पाखंड पर चोट ... कांकर पाथर जोड़कर,
मस्जिद लई बनाए ।
ता उपर चढ़ि मुल्ला बांग दे
क्या बहरा हुआ हैं खुदाय।।

शाकाहार के पक्षधर कबीर

बकरी पाती खात है, ताकी काढ़ी खाल।
जो बकरी को खात है, तिनका कौन हवाल।।

संत शिरोमणि कबीरदास जी कहते हैं कि जो बकरी केवल घास खाती है उसकी खाल खींच ली जाती है तो उन मनुष्यों का क्या हाल होता होगा जो बकरी का मांस खाते हैं।

सांच बराबर तप नहीं, झूठ बरोबर पाप।
जाके हृदय साँच हैं, ताके हृदय आप।।

उनका कहना था कि **'बुरा जो देखन मैं चला बुरा ना मिला कोए, जो मन अपना देखिया मुझसे बुरा ना कोए'** अर्थात वो कहते थे कि दूसरों में कमियां, बुराईयां ढूंढने की जगह हमें स्वंय में बुराईयां ढूंढनी चाहिए क्योंकि सारी कुरितियां तो हमारे भीतर ही समाहित है। इस प्रकार कबीर दास जी ने अपने व्यक्तित्व और कृतित्व से समाज जागरण एवं समाज को दिशा देने का कार्य किया जो सदैव प्रेरणा देते रहेगा । कबीर साहब जी द्वारा लिखित ग्रंथ 'बीजक' धार्मिक ग्रंथों में से एक है।

हिंदू साम्राज्य दिन उत्सव

हिंदू साम्राज्य दिवस ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी यह छत्रपति शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक का दिवस है। जो इस बार 12 जून को है। शिवाजी महाराज द्वारा आज ही के दिन मुस्लिम आक्रांताओं से त्रस्त भारतीय समाज को गौरवपूर्ण व सम्मान पूर्वक अभिव्यक्ति का अहसास दिलाया। उस समय की परिस्थिति में जन सामान्य में ये भाव था ही नही कि कोई हिंदू भी राजा बन सकता है शिवाजी महाराज ने हिंदू पदपादशाही की स्थापना कर सभी को गर्व का अनुभव करवाया।

वर्तमान समय में भी समाज के मन में उसी विजिगीषा को, आत्मविश्वास को उद्यम को जागृत करना चाहिये। आज भी प्रत्येक व्यक्ति को शिवाजी महाराज के चरित्र का, गुणों का अनुकरण कर हिंदुसमाज का, हिंदुसमाज के साथ रहकर, अपने लिये नहीं, अपने हिंदूराष्ट्र की सर्वांगीण उन्नति के लिये समाज का सक्षम नेतृत्व करने वाला व्यक्ति बनना है, और सारे समाज के आत्मविश्वास को एक नई ऊँचाई देनेवाला ऐसा एक हिंदू याने प्रजाहितदक्ष, सहृदयी, सर्वत्र समभावी, नीतिकठोर ऐसा शासन समाज के द्वारा ही स्थापित करवाना है। जिसकी कुछ-कुछ अभिव्यक्ति होना शुरू हो गई है लेकिन भारत जैसे विशाल देश में जहां 28 राज्य है और विश्व की दूसरी सबसे बड़ी जनसंख्या रहती है ऐसे नेतृत्व की कमी दिखती है।

आज की परिस्थिति में यह जो उपाय है, वह समाज के संगठन से होनेवाला है। समाज की गुणवत्ता, उद्यम और आत्मविश्वास के आधार पर होने वाला है। इसी प्रकार की भूतपूर्व परिस्थिति में इसका एक जिवंत उदाहरण शिवाजी महाराज के उद्यम में से हमको मिलता है। शिवाजी महाराज के द्वारा संपूर्ण राष्ट्र के लिये किये गये प्रयासों की, यह राज्याभिषेक सफल परिणिति है और इसलिये इसको हम हिंदू साम्राज्य दिवस कहते है। व्यक्ति के रूप में सगुण आदर्श के नाते छत्रपति शिवाजी महाराज के जीवन का प्रत्येक अंश हमारे लिये दिग्दर्शक है। उस चरित्र की, उस नीति की, उस कुशलता की, उस उद्देश्य के पवित्रता की आज आवश्यकता है।

शिवाजी महाराज और समर्थ गुरु की भेंट प्रसंग को विराट उत्सव बना दिया

महाराष्ट्र के सतारा जिले के चाफळ नामक स्थान से मात्र 2 किलोमीटर दूरी पर स्थित शिंगणवाड़ी नामक एक स्थान है जहां पर छत्रपति शिवाजी महाराज एवं समर्थ सद्गुरू रामदास स्वामी महाराज की पहली बार भेंट हुई थी।

इस घटना को ग्रामीण लोगों ने आज एक त्यौहार का रूप दे दिया है। पाटन के तत्कालीन विधायक एवं महाराष्ट्र शासन में मंत्री रहे श्री विक्रम सिंह पाटणकर जी के प्रयत्नों से यहां पर एक स्मारक का निर्माण हुआ है जिसका 1990 में महाराष्ट्र के तत्कालीन मुख्यमंत्री ने विधिवत उद्घाटन किया।

प्रतिवर्ष वैशाख शुद्ध नवमी के दिन चाफळ व आसपास के ग्रामीण एक पालकी में छत्रपति शिवराय को बैठाकर दिंडी के रूप में 2 किलोमीटर पैदल चलकर के इस स्थान पर आते हैं। उसी समय शिंगणवाड़ी के ग्रामजन पालकी में समर्थ रामदास स्वामी की मूर्ति को लेकर आते हैं और इन दोनों पालकियों की भेंट को प्रतीकात्मक रूप से छत्रपति शिवाजी महाराज एवं समर्थ रामदास स्वामी महाराज की भेंट मानते हैं। फिर यह दोनों पालकियां एक भव्य दिंडी का स्वरूप धारण कर वापस शिंगणवाड़ी ग्राम आती हैं। यहां पर एक प्रकट कार्यक्रम होता है जिसमें आमंत्रित अतिथि एवं वक्ता मंचासीन होकर अपना उद्बोधन देते हैं।

घनघोर यातनाएं सहन की फिर भी धर्म न छोड़ा

गुरु अर्जुन देव सिखों के पांचवें गुरु थे। 14 जून को गुरु अर्जुन देव का शहादत दिवस है। गुरु अर्जन देव जी गुरु परंपरा का पालन करते हुए कभी भी गलत चीजों के आगे नहीं झुके। उन्होंने शरणागत की रक्षा के लिए स्वयं को बलिदान कर देना स्वीकार किया, लेकिन मुगलशासक जहांगीर के आगे झुके नहीं। वे हमेशा मानव सेवा के पक्षधर रहे। सिख धर्म में वे सच्चे बलिदानी थे। उनसे ही सिख धर्म में बलिदान की परंपरा का आगाज हुआ।

गुरु अर्जुन देव जी का जन्म 15 अप्रैल साल 1563 में हुआ था। वे गुरु रामदास और माता बीवी भानी के पुत्र थे। उनके पिता गुरु रामदास स्वयं सिखों के चौथे गुरु थे, जबकि उनके नाना गुरु अमरदास सिखों के तीसरे गुरु थे। गुरु अर्जुन देव जी का बचपन गुरु अमरदास की देखरेख में बीता था। उन्होंने ही अर्जुन देव जी को गुरमुखी की शिक्षा दी। साल 1579 में उनका विवाह माता गंगा जी के साथ हुआ था। दोनों का एक पुत्र हुआ, जिनका नाम हरगोविंद सिंह था, जो बाद में सिखों के छठवें गुरु बने।

अर्जुन देव ने रखवाई थी स्वर्ण मंदिर की नींव - वर्ष 1581 में गुरु अर्जुन देव सिखों के पांचवे गुरु बने। उन्होंने ही अमृतसर में श्री हरमंदिर साहिब गुरुद्वारे की नींव रखवाई थी, जिसे आज स्वर्ण मंदिर के नाम से जाना जाता है। कहते हैं इस गुरुद्वारे का नक्शा स्वयं अर्जुन देव जी ने ही बनाया था।

गुरु ग्रंथ साहिब का संपादन किया - उन्होंने श्री गुरु ग्रंथ साहिब का संपादन भाई गुरदास के सहयोग से किया था। उन्होंने रागों के आधार पर गुरु वाणियों कावर्गीकरण भी किया। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में स्वयं गुरु अर्जुन देव के हजारों शब्द हैं। उनके अलावा इस पवित्र ग्रंथ में भक्त कबीर, बाबा फरीद, संत नामदेव, संत रविदास जैसे अन्य संत-महात्माओं के भी शब्द हैं।

गुरु अर्जुन देव जी की बलिदान गाथा - मुगल बादशाह अकबर की मृत्यु के बाद अक्तूबर, 1605 में जहांगीर मुगल साम्राज्य का बादशाह बना। साम्राज्य संभालते ही गुरु अर्जुन देव के विरोधी सक्रिय हो गए और वे जहांगीर को उनके खिलाफ भड़काने लगे। उसी बीच, शहजादा खुसरो ने अपने पिता जहांगीर के खिलाफ बगावत कर दी। तब जहांगीर अपने बेटे के पीछे पड़ गया, तो वह भागकर पंजाब चला गया। खुसरो तरनतारन गुरु साहिब के पास पहुंचा। तब गुरु अर्जन देव जी ने उसका स्वागत किया और उसे अपने यहां पनाह दी।

इस बात की जानकारी जब जहांगीर को हुई तो वह अर्जुन देव पर भड़क गया। उसने अर्जुन देव को गिरफ्तार करने का आदेश दिया। उधर गुरु अर्जुन देव बाल हरिगोबिंद साहिब को गुरुगद्दी सौंपकर स्वयं लाहौर पहुंच गए। उन पर मुगल बादशाह जहांगीर से बगावत करने का आरोप लगा। जहांगीर ने गुरु अर्जन देव जी को यातना देकर मारने का आदेश दिया।

गर्म तवे पर बिठाकर दी गई यातनाएं - मुगल शासक जहांगीर के आदेश के मुताबिक, गुरु अर्जुन्देव को पांच दिनों तक तरह-तरह की यातनाएं दी गई, लेकिन उन्होंने शांत मन से सबकुछ सहा। अंत में ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि संवत् 1663 (30 मई, सन् 1606) कोउन्हें लाहौर में भीषण गर्मी के दौरान गर्म तवे पर बिठाया। उनके ऊपर गर्म रेत और तेल डाला गया यातना के कारण जब वे मूर्छित हो गए, तो उनके शरीर को रावी की धारा में बहा दिया गया। उनके स्मरण में रावी नदी के किनारे गुरुद्वारा डेरा साहिब का निर्माण कराया गया, जो वर्तमान में पाकिस्तान में है। गुरु अर्जुन देव का पूरा जीवन मानव सेवा को समर्पित रहा है। वे दया और करुणा के सागर थे। वे समाज के हर समुदाय और वर्ग को समान भाव से देखते थे

भारतीय योग को पूरे विश्व ने अपनाया

विश्व योग दिवस का सार वाक्य - आरोग्य के लिये योग

अंर्तराष्ट्रीय योग दिवस प्रतिवर्ष 21 जून को मनाया जाता है। यह दिन वर्ष का सबसे लम्बा दिन होता है और योग भी मनुष्य को दीर्घायु बनाता है। पहली बार यह दिवस 21 जून 2015 को मनाया गया, जिसकी पहल भारत के प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी नें 27 सितम्बर 2014 को **संयुक्त राष्ट्र महासभा** में अपने भाषण से की थी जिसमें उन्होंने कहा था कि ''योग भारत की प्राचीन परम्परा का एक अमूल्य उपहार है यह दिमाग और शरीर की एकता का प्रतीक है। मनुष्य और प्रकृति के बीच सामंजस्य है। विचार, संयम और पूर्ति प्रदान करने वाला है तथा स्वास्थ्य और भलाई के लिए एक समग्र दृष्टिकोण को भी प्रदान करने वाला है। यह व्यायाम के बारे में नहीं है, लेकिन अपने भीतर एकता की भावना, दुनिया और प्रकृति की खोज के विषय में है। हमारी बदलती जीवन- शैली में यह चेतना बनकर, हमें जलवायु परिवर्तन से निपटने में मदद कर सकता है।

21 जून को **अंर्तराष्ट्रीय योग दिवस** घोषित किया गया। 11 दिसम्बर 2014 को संयुक्त राष्ट्र के 177 सदस्यों द्वारा 21 जून को अंर्तराष्ट्रीय योग दिवस को मनाने के प्रस्ताव को मंजूरी मिली। प्रधानमन्त्री मोदी के इस प्रस्ताव को 90 दिन के अन्दर पूर्ण बहुमत से पारित किया गया, जो संयुक्त राष्ट्र संघ में किसी दिवस प्रस्ताव के लिए सबसे कम समय है। इस पहल को कई वैश्विक नेताओं से समर्थन मिला।

संयुक्त राष्ट्र के घोषणा करने के बाद, श्री श्री रविशंकर ने श्री नरेन्द्र मोदी के प्रयासों की सराहना करते है कहा - 'किसी भी दर्शन, धर्म या संस्कृति के लिए राज्य के संरक्षण के बिना जीवित रहना बहुत मुश्किल है। योग लगभग एक अनाथ की तरह अब तक अस्तित्व में था। अब संयुक्त राष्ट्र द्वारा आधिकारिक मान्यता योग के लाभ को विश्वभर में फैलायेगी।'

आज की भागदौड़ भरी और व्यस्त जीवनशैली के कारण अधिकांश लोग मानसिक तनाव से पीड़ित होने लगे हैं। यंत्र पर आधारित मनुष्य जीवन ने मनुष्य को भी यांत्रिक बना दिया है। पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण, भौतिक वस्तुओं के प्रति अति मोह, जीवन में संवेदना और संबंधों से अधिक रुपयों का महत्व, इलेक्ट्रॉनिक वस्तुओं का अत्यधिक उपयोग, शहर में जाकर बसने की लोगों में बढ़ रही लालसा, लक्ष्य-प्राप्ति के मार्ग में आने वाले अवरोध, अपने कार्य क्षेत्र में बार-बार मिलती असफलताएं, स्पर्धात्मक जीवन-शैली, अनगिनत अपेक्षाएं आदि मानसिक तनाव के मुख्य कारण हैं।

शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति मिलेगा जो मानसिक तनाव से पीड़ित ना हुआ हो। मानसिक तनाव अर्थात् चिंता, हताशा, मायूसी, घबराहट, बेचैनी और उन्माद की एक ऐसी स्थिति जो व्यक्ति के शारीरिक और मानसिक संतुलन पर घातक असर करती है।

योग द्वारा मानसिक तनाव से मुक्ति के उपाय - सात्विक आहार- फास्ट फूड को छोड़कर अपने स्वदेशी परंपरागत और सात्विक आहार को अपनाएं। ऐसा सात्विक आहार लेना चाहिए जिससे शरीर के लिए जरूरी सभी प्रकार के मिनरल्स, प्रोटींस, विटामिंस और केमिकल्स पूरी मात्रा में मिलें। ऋतुओं के अनुसार ताज़ा और हल्का आहार लेना चाहिए।

सुर्य नमस्कार - भारतीय ऋषियों ने सुर्य नमस्कार की विधि को जन सामान्य तक पहुचांया जिससे पूरे शरीर का व्यायाम विभिन्न आसनों के माध्यम से हो जाता है इसमें शरीर के बाहर के व भीतर के दोनों अंगों का व्यायाम हो जाता है साथ ही विश्व के प्रत्यक्ष देव सूर्य जी का भी मंत्रोच्यार से स्तुति हो जाती है।

ध्यान-योग अधिकांश लोग आधुनिक जीवन शैली के कारण ही तनाव में जी रहे हैं। ध्यान करने से मन एकदम शांत होकर तनाव रहित हो जाता है। ध्यान अर्थात् किसी एक वस्तु के प्रति चित्त को केंद्रित करना। योग ध्यान द्वारा सम-विषम किसी भी परिस्थिति को अपने ऊपर हावी न होने देना और मन पर नियंत्रण बनाए रखना सुख आने पर इतने खुश न हो जाएं कि उसे पचा न सकें और दुःख आने पर इतने दुःखी न हो जाएं कि जीना ही दुश्वार हो जाए।

एलोवेरा की खेती

करें खेती एलोवेरा की, सेहत के साथ मिलेगा धन भी, सरकारी सहायता का साथ, फिर क्यों रहे बेरोजगार जी ।

बेरोजगारी के लिए खास बिजनेस, थोड़ी पूंजी और जमीन से करें ये व्यवसाय । ये बिजनेस है एलोवेरा की खेती का। इन दिनों एलोवेरा की डिमांड में तेजी से इजाफा हो रहा है। कॉस्मेटिक प्रॉडक्ट हो या फिर आयुर्वेदिक दवा, एलोवेरा का इस्तेमाल हर जगह होता है। यही वजह है कि बाजार में इसकी डिमांड है।

एलोवेरा की खेती से जबरदस्त मुनाफा होने की पूरी संभावना है। भारत में इन दिनों इसकी खेती का काफी चलन है। इसके लिए खेत में ज्यादा नमी होने की जरूरत नहीं है। उन खेतों में इसे उगाया जाता है, जहां पानी का ठहराव न हो। इसकी खेती के लिए रेतीली मिट्टी बेहतर मानी जाती है। एलोवेरा की खेती के लिए बेहतर जानकारी होना भी जरूरी है। समय-समय पर खेती की सफाई करते रहना चाहिए। इन पौधों में बहुत जल्द ही कीट लग जाते हैं, लिहाजा कीटनाशक का प्रयोग करना जरूरी है। लेकिन ध्यान दें कि कीटनाशक के लिए यूरिया या डीएपी का इस्तेमाल नहीं किया जाता है। एलोवेरा की कई प्रजातियां होती है। बेहतर कमाई के लिए बार्बाडेन्सीस प्रजाति मौजूदा समय में सबसे ज्यादा इस्तेमाल में लाई जा रही है। जूस बनाने से लेकर कॉस्मेटिक आइटम बनाने के लिए इसका इस्तेमाल होता है। डिमांड की वजह से किसान भी इसे लगाना ज्यादा पसंद करते हैं क्योंकि इसकी पत्तियां बड़ी होती हैं और इसमें से ज्यादा जेल निकलता है। इंडिगो प्रजाति भी अच्छी मानी जाती है, जो कि आम तौर पर घरों में दिखाई देती है।

कब और कैसे करें खेती - एलोवेरा की बुवाई अक्टूबर-नवंबर तक किया जा सकता है। हालांकि किसान अगर इसकी बुवाई पूरे साल करें तो भी कोई नुकसान नहीं है। एक पौधे से दूसरे पौधे की बीच की दूरी 2 फीट होना जरूरी है। एक बार पौधे लगाने के साल में दो बार इनकी कटाई की जा सकती है और बेचकर मुनाफा कमाया जा सकता है। इसकी खेती में जानवरों से कोई नुकसान नहीं है।

एलोवेरा से 5 गुना मुनाफा - एक बीघा खेत में एलोवेरा के 12,000 पौधे लगाए जा सकते हैं। एलोवेरा के एक पौधे की कीमत 3-4 रुपये तक होती है। यानी बीघा में एलोवेरा लगाने पर करीब 40,000 रुपये का खर्च आएगा। एलोवेरा के एक पौधे से 4 किलो तक पत्ते निकलते हैं। एक पत्ते की कीमत 7 रुपये से 8 रुपये तक रहती है।

कैसे होगी बंपर कमाई - आप एलोवेरा की पत्तियां बेचकर मुनाफा कमा सकते हैं। इसके अलावा जेल निकालकर भी सीधा कंपनियों को बेच सकते हैं। जिसमें तगड़ी कमाई होगी। एक बीघे में सिर्फ पत्तियां बेचकर ही लाखों रुपये की कमाई हो जाएगी। जैसे आपका बिजनेस चलने लगे, एलोवेरा की खेती का दायरा बढ़ाते जाएं और आप जल्द ही करोड़पति बन सकते हैं।

ये करेंगे मदद - सरकारी वेबसाइट ehaat तथा gem आपके लिए लाभकारी हो सकती है, साथ ही साथ आयुर्वेदिक व सौंदर्य प्रसाधन बनाने वाली कंपनियां जैसे पतंजलि, अयुरा, हिंदुस्तान लीवर, डाबर, हिमालया, झंडु, बैदनाथ, लक्मे जैसी काफी निर्माता कंपनियों को आपके प्रोडक्ट की जरूरत होती है।

हलमा से हुआ तालाब का गहरीकरण तालाब का नाम रखा वीरांगना झलकारी बाई

धरती मां, जलदेवी एवं गेती-फावड़े की पूजा-अर्चना कर सामूहिक श्रमदान किया

परमार्थी, स्वाभिमानी, स्वावलंबी, सामर्थ्यवान बनाने वाली श्रेष्ठ झाबुआ-आलीराजपुर की भीली परंपरा हलमा का पुनः जागरण महू क्षेत्र के ग्राम डमाली पिपलिया में हुआ।

भील समुदाय के आव्हान पर जनजाति समाज के साथ इंदौर, महू, बालाघाट, बड़वानी, धार, खरगोन, झाबुआ आदि जगह से हलमा के साक्षी बनने आए अतिथियों ने जिनमें धार्मिक, राजनीति, सामाजिक संस्थाओं, मजदूरों, इंजीनियर, शिक्षक, पत्रकार, छात्र, शोधार्थी, बच्चे-बुजुर्ग थे। अतिथियों ने भी परमार्थ और धर्म के कार्य हेतु समाज के साथ धरती मां की प्यास बुझाने के लिए बढ़-चढ़कर भाग लिया। हलमा की शुरूआत वहां आए ग्रामीणजनों, अतिथियों ने धरती मॉं जलदेवी एवं गेती, फावड़े की पूजा कर अपने पूर्वजों का स्मरण कर की। गेती, फावड़ा लेकर काम करते हुए सैकड़ों का हुजूम ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो हजारों हाथ भागीरथ बनकर मां गंगा को महू में लाएंगे।

चार गाँवो से 300 से अधिक जनजाति परिवार हलमा करने आये। कार्यक्रम संयोजक जनजातीय प्रकोष्ठ राजभवन से विषय विशेषज्ञ डॉ दीपमाला रावत थे। आज विश्व जल संकट, ग्लोबल वार्मिंग जैसी अनेक समस्याओं से जूझ रहा है। परमार्थ की भीली परम्परायें इन वैश्विक समस्याओं के समाधान की ओर राह दिखाती हैं।

तालाब का नाम रखा वीरांगना झलकारी बाई - हलमा से बने इस तालाब का नाम मंत्री सुश्री उषा ठाकुर ने सबकी सहमति से जनजातीय वीरागंना झलकारी बाई के नाम पर रखा। परमार्थ की यह परंपरा हलमा अनवरत जारी रहेगी। इस संकल्प के साथ हलमा का समापन हुआ।

अपने जीवन में वृक्ष लगायें क्योंकि यदि 05 सेकंड के लिए धरती से ऑक्सीजन गायब हो जाए तो क्या होगा?

यदि 05 सेकंड के लिए धरती से ऑक्सीजन गायब हो जाए तो क्या होगा?

05 सेकंड के लिए धरती बहुत ठंडी हो जाएगी।

जितने भी लोग समुद्र किनारे लेटे हैं...उन्हें तुरंत सनबर्न होने लगेगा।

दिन में भी अँधेरा छा जाएगा।

हर वह इंजन रूक जाएगा जिनमें आंतरिक दहन होता है।

रनवे पर टेक ऑफ कर चुका प्लेन वहीं क्रैश हो जाएगा।

धातुओ के टुकड़े बिना वेल्डिंग के ही आपस में जुड़ जाएंगे।

ऑक्सीजन न होने का यह बहुत भयानक साइड इफेक्ट होगा......

पूरी दुनिया में सबके कानों के पर्दे फट जाएंगे....क्योंकि 21प्रतिशत ऑक्सीज़न के अचानक लुप्त होने से हवा का दबाव घट जाएगा।

सभी का बहरा होना पक्का है।

कंक्रीट से बनी हर बिल्डिंग ढेर हो जाएगी।

हर जीवित कोशिका फूलकर फूट जाएगी।

पानी में 88.8 प्रतिशत ऑक्सीज़न होती है।

ऑक्सीजन न होने पर हाइड्रोजन गैसीय अवस्था में आ जाएगी और इसका वॉल्यूम बढ़ जाएगा।

हमारी साँसे बाद में रूकेंगी, हम फूलकर पहले ही फट जाएंगे।

समुद्रों का सारा पानी भाप बनकर उड़ जाएगा.....क्योंकि बिना ऑक्सीजन पानी हाइड्रोजन गैस में बदल जाएगा और यह सबसे हल्की गैस होती है तो इसका अंतरिक्ष में उड़ना लाजमी है

ऑक्सीजन के अचानक गुम होने से हमारे पैरों तले की जमीन खिसककर 10-15 किलोमीटर नीचे चली जाएगी।

........रूह कांप गई क्या???

पेड़ लगाना जरूरी है, जीवन बचाना जरूरी है , वो तब बचेगा जब पर्यावरण बचेगा।

काशी जसा अरु सच बी सामनऽ आऊणुँ चाइजे

▸ दुर्गेश कुमार साध

गया दिन नऽ मऽ काशी की 'ज्ञानवापी' मस्जिद (!) सी स्वयं महादेव प्रकट हुया। वसो तो नाँव सीज जाहिर छे कि यो नाँव कोई मस्जिद को हुई न्ही सकतो। ई तो याज वात हुई गई कि कोई को नाँव 'जावेद प्रसाद' होय या फिरी 'मनीष खान' होय ! एको तो नाँवज चीखी-चीखी नऽ खुद कई रह्यो थो कि भाई ''हाऊँ ज्ञानवापी छे, अनऽ हाऊँ 'मंदिर' छे'', पण अपण लोग सालों-साल सी 'गाटा' सरीका पड़ेल रह्या, अनऽ सऊणऽ को नाटक करता रह्या !

ज्ञानवापी मंदिर मऽ जिना बखत मऽ मंदिर खऽ मुगल लोग न नऽ ध्वस्त कर्यो गयो थो, ऊ बखत बाबा का एक गण 'नंदी' महाराज नऽ ओलेंग चौखटज पऽ अपणो आसन जमाई लियो थो, न ई जिद करी नऽ बठ्या था, कि जी कई होय, हाऊँ याँ सी तमऽ तक नी हटणऽ को, जम तक म्हारा बाबा महादेव को मंदिर फिरी सी स्थापित नई हुई जातो। नंदी जी की तपस्या रंग लाई, अनऽ बाबा स्वयं प्रकट हुई गया, जी वात कोर्ट नऽ बी मानी ली, अनऽ वहाँ पर अस्थायी रुप सी वजु (हाथ-पाँय धऊणऽ की जगा) की जगा खऽ बदलन को फरमान जारी करी नाख्यो, जी हमारा पक्ष मऽ अपण सकारात्मक कई सकाँज।

खैर, कोर्ट का आदेश सी काशी मऽ तो बाबा का मिलनऽ का साक्ष्य मिली गया, ऊ तो मिलनुँज था, पण हमारा देश मऽ असी कई सारी जगा न छे, जहाँ पर पईलऽ मंदिर था, जिनख तोड़ी कऽ नऽ अमऽ मस्जिद नऽ बणाई नाखीज। ई हमारा आत्मसम्मान पर असा धब्बा छे, जिनखऽ मिटाऊण का लेणऽ कोई डिटर्जेंट अबी तक बणी नई पायो हँई।

याँ तो खैर नंदी महाराज खुद आसन जमाई कऽ नऽ बठ्या था, जिनका कारण हम ई लड़ाई लड़ण मऽ कुछ सक्षम हुया, पण आगऽ की लड़ाई अरु भी कठिन होणऽ वाळई छे, कारण कि ई युग 'डिजीटल युग' छे। आज जानकारी नऽ, बहोत तेजी सी माणुस का हाथ मऽ जाई रहीज। हमारो समाज जेतरो जाग्रत छे, ओका सी कई गुना ज्यादा इन लोग नऽ को जाग्रत बी छे अनऽ प्रतिबद्ध भी। आज इन्न नऽ का समूह नऽ मऽ ई चली रोज कि हिन्दू लोग अपणी जगा नऽ पऽ कब्जो जमाऊण को प्रयास करी रह्याज, जेका सी असा कोई भी साक्ष्य, जी उनकी इमारत खऽ एक हिन्दू इमारत घोषित करऽ, उन्नऽ न खऽ मिटाई नाखो। एका कारण अमऽ अपणी भूमिका बहोत जरुरी हुई गईज।

कुछ मुख्य मंदिर, जिनखऽ तोड़ी कऽ नऽ मस्जिद नऽ बणाई अनऽ जिनखऽ हमखऽ अबी बी मुक्त कराड़नुँज-

मंदिर को मूल नाँव	हाल को नाँव	जगा
27 मंदिर	कुव्वत-उल-इस्लाम	दिल्ली
रुद्र महालय मंदिर	जामी मस्जिद	पाटण (गुजरात)
महाकाली मंदिर	जामा मस्जिद	अहमदाबाद (गुजरात)
केशवनाथ मंदिर	शाही ईदगाह मस्जिद	मथुरा (उ.प्र.)
तेजो महालय मंदिर	ताजमहल	आगरा (उ.प्र.)
भोजशाला	कमल मौला मस्जिद	धार (म.प्र.)
देवी मंदिर	बीजा मंडल मस्जिद	विदिशा(म.प्र.)
अटाला देवी मंदिर	अटाला मस्जिद	जौनपुर (उ.प्र.)
काशी विश्वनाथ	ज्ञानवापी मस्जिद	वाराणसी (उ.प्र.)
आदिनाथ मंदिर	अदीना मस्जिद	मालदा (प.बं.)

अपण नऽ खऽ चाईजे कि हमारा आसपास असा मंदिर, जी घणा पुराणा होय, जिनको कोई ऐतिहासिक महत्व होय, ओका सी संबंधित कागज, लेख, शोध, समाचार वगैरा की जानकारी हम लोग जुटावाँ, अगर नई हँई, तो ओका सी संबंधित दस्तावेज बनाऊण का लेणऽ काई-काई कर्यो जाई सकज, ओकी लिस्ट बणावाँ, अपणा घर-मोहल्ला-गाँव का बुजुर्ग नऽ को साक्षात्कार लई सकाँज, उनका सी संदर्भ पूछी सकाँज, अनऽ समय आऊणऽ पऽ उचित साक्ष्य का रुप मऽ रखणऽ की सोय जमाई सकाँज, ताकि हमारा जी देवी-देवता, सालों-साल सी कैद काटी रह्याज, उनखऽ मुक्त कराड़्यो जाई सकऽ।

थोड़ी में घणी

काशी में प्रगट हुया भोलेनाथ

अशोक वर्मा

दुर्योधन को घमण्ड कि पाण्डव के ''पांच गाँव तो कई सुई की नोंक बराबर जगाह भी नी दुंगा'' ने महाभारत को युद्ध करवयी दियो । दुर्योधन को राज्य भी गयो, सभी भाई बन्धु नाती पोता सहित खुद के भी युद्ध की भेंट चढ़नो पड़्यो। ऐसोज श्री राम जन्मभूमि आन्दोलन का समय मुसलमान नेताना से मांग करी थी कि अयोध्या में श्री राम जन्मभूमि, मथुरा में श्रीकृष्ण जन्मभूमि और काशी में बाबा विश्वनाथ मंदिर हिन्दूना के वापस करी दो तो मन्दिर तोड़ी के मस्जिद बणाया हुआ चालीस हजार से ज्यादा जगा से हिन्दू अपणो दावों हटई लेगों। तीन दि दो, चालीस हजार छोड़ी दांगा । पण मुसलमान सत्ता की गर्मी में था नी मान्या । अब अजोध्याजी में भगवान राम जी को मन्दिर बणी रियो हैं । मथुरा में कोर्ट में केस चली रियो है जल्दीज फैसलो आवेगो । काशीजी में चमत्कार हुई गयो काशीविश्वनाथ मन्दिर तोड़ी के बनई ज्ञानवापी मस्जिद में कोर्ट का आदेश से मन्दिर का सबूत ढुंढने गई सरकारी टीम के कुआं में स्वयं विश्वनाथ मिली गया ।

ज्ञानवापी का अन्दर मन्दिर का सब सबूत कोर्ट के सोंपी दिया है। जिस दिन से भोलेनाथ प्रकट हुआ उस दिन से देशभर में रोज कहीं ने कहीं मस्जिद में मन्दिर का सबूत मिली रिया है। कुतुबमीनार और आसपास खुदाई में मन्दिर का सबूत मिल्या । मेंगलोर में नई मस्जिद बनाने का लिए पूरानी तोड़ी तो निचे मन्दिर निकल्यो। अब ताजमहल तेजोमहालय है, अजमेर की दरगाह भगवान एकलिंग नाथ जी को मन्दिर तोड़ी के बणय हैं ऐसी सैकड़ों जगाह ना की जांच करवाने की मांग सरकार और कोर्ट से हुई री हैं । धार भोजशाला में नमाज बन्द करने की अर्जी कोर्ट में दी है । मतलब तीन नी दिया तो अब चालीस हजार लेने का लिए हिन्दू जागी रियो है। इतिहास का पन्ना पलटते पलटते बात वां तक जावेगी जद इनका पूर्वजना के डर और लालच में अई के हिन्दू से मुसलमान बननो पड़्यो थो ।

मंदिरों को तोड़कर बनाई गई मस्जिदें गुलामी के चिन्ह हैं - महात्मा गांधी

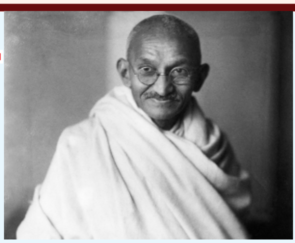

किसी भी धार्मिक उपासना गृह के ऊपर बलात्कार पूर्वक अधिकार करना बड़ा जघन्य पाप है। मुगलकाल में धार्मिक धर्मान्धता के कारण मुगल शासकों ने हिन्दुओं के बहुत से धार्मिक स्थानों पर कब्जा कर लिया था जो हिन्दुओं के पवित्र आराधना स्थल थे। इनमें से बहुत से लूटपाट कर नष्ट-भ्रष्ट कर दिए गए और बहुत को मस्जिद का रूप दे दिया। यद्यपि मन्दिर और मस्जिद यह दोनों ही भगवान की उपासना के पवित्र स्थान हैं और दोनों में कोई भेद नहीं है तथापि हिन्दू और मुसलमान दोनों की उपासना परम्परा अलग-अलग है।

धार्मिक दृष्टिकोण से एक मुसलमान यह कभी बरदाश्त नहीं कर सकता कि उसकी मस्जिद में , जिसमें वह बराबर इबादत करता चला आ रहा है, कोई हिंदू उसमें कुछ ले जाकर धर दे। इसी तरह कोई हिन्दू भी कभी यह सहन नहीं करेगा, कि उसके मन्दिर में, जहां वह बराबर राम, कृष्ण, शंकर, विष्णु और देवों की उपासना करता चला आ रहा है कोई उसे तोड़कर मस्जिद बना दे। जहां पर ऐसे कपट हुए है वास्तव में ये चिन्ह गुलामी के हैं। हिन्दू मुसलमान दोनों को चाहिए कि ऐसी जगहों पर जहां इस तरह के झगड़े हों आपस में तय कर लें। मुसलमानों के वे पूजन-स्थल जो हिन्दुओं के अधिकार में है, हिन्दू उन्हें उदारतापूर्वक मुसलमान को लौटा दें, इसी तरह हिन्दुओं के जो धार्मिक स्थल मुसलमानों के कब्जे में हैं उन्हें खुशी-खुशी हिन्दुओं को सौंप दें। इससे आपसी भेदभाव नष्ट होगा, हिन्दू-मुसलमानों में आपस में एकता की वृद्धि होगी, जो भारत जैसे धर्म प्रधान देश के लिए वरदान सिद्ध होगी। **(27-7-1937 के 'नवजीवन' के अंक में श्रीराम गोपाल 'शरद' के पत्र के उत्तर में)**

घर का वैद्य अमृतधारा

1. बोतल शीशे की
2 .कपूर (भीमसेनी कपूर हो तो उत्तम है)
3.पिपरामिंट (पुदीने के फूल)
4.अजवायन का सत्व

ये सारी सामग्री 5-5 ग्राम के अनुपात में लें और बोतल में डाल दें 15-20 मिनट के बाद ये एक तरल द्रव के रूप में हो जायेगा बस अमृत धारा तैयार हो गया।

अमृतधारा के उपयोग-

1. बदहजमी, पेटदर्द, दस्त, उल्टी में 3-4 बूंद थोड़े पानी में मिलाकर सेवन करें।

2. हैजा में 1 चम्मच प्याज के रस में 2 बूंद डालकर सेवन करें।

3. सिरदर्द में 2 बूँद सिर, माथे और कान के आस पास मलें।

4. छाती का दर्द मीठे (तिल) तेल में अमृतधारा मिलाकर मलने से ठीक हो जाता है।

5. सूँघने पर साँस खुलकर आता है तथा जुकाम ठीक हो जाता है।

6. छालों पर थोड़े पानी में 1-2 बूँद डालकर लगाने से लाभ होता है।

7. दाँत दर्द में रूई में भिगोकर दबाने से लाभ होता है।

8. श्वास, खाँसी, दमा और क्षय-रोग में 4-5 बूँद अमृतधारा ठंडे पानी में मिलाकर सेवन करें।

9. दिल के रोग में आँवले के मुरब्बे में 3-4 बूँद डालकर खाने से लाभ होता है।

10. पेट दर्द में 2 बूँद बताशे में डालकर खाने से लाभ होता है।

11. भोजन के बाद दोनों समय 2-3 बूँद अमृतधारा ठंडे पानी में मिलाकर पीने से मन्दाग्नि, अजीर्ण, बादी, बदहजमी एवं गैस ठीक हो जाती है।

12. 10 ग्राम गाय के मक्खन और 5 ग्राम शहद में 3 बूँद अमृतधारा मिलाकर प्रतिदिन खाने से शरीर की कमजोरी में लाभ होता है।

13. हिचकी में 1-2 बूँद अमृतधारा जीभ में रखकर मुँह बंद करके सूँघने से 4 मिनट में ही लाभ होता है।

14. 10 ग्राम नीम के तेल में 5 बूँद अमृतधारा मिलाकर मालिश करने से हर तरह की खुजली में लाभ होता है।

15. ततैया, बिच्छू, भौरा या मधुमक्खी के काटने के स्थान पर अमृतधारा मलने लाभ होता है।

16. 10 ग्राम वैसलीन में 4 बूँद अमृतधारा मिलाकर, शरीर के हर तरह के दर्द पर मालिश करने से दर्द में लाभ होता है। फटी बिवाई और फटे होंठों पर लगाने से दर्द ठीक हो जाता है तथा फटी चमड़ी जुड़ जाती है।

17. अगर दाद हो तो 3-4 बूंद एक चमच तेल में मिला के दाद वाली जगह लगायें। मात्र 2-3 बार के प्रयोग में ही दाद ठीक हो जाता है।

18. अगर कभी कहीं चोट लग जाये और सूजन और दर्द हो, 30 -30 मिनट के बाद अमृत धारा लगाते रहे, मात्र 2-3 दिन में आप की सुजन खत्म हो जाएगी।

19. सर्दी होने पर थोड़ा पानी गरम करें और 3-4 बूंद अमृत धारा की डाल कर भाप लें सर्दी में तुरंत राहत मिलेगी।

20. बारिश में मौसम में अकसर पैरों की उंगलियों में सड़न हो जाती है या पैरों की उंगलियों में घाव हो जाता है। पैरों को धों लें ओर कपड़े से पोंछ कर अमृत धारा लगायें, 2-3 बार लगाने से घाव ठीक हो जाता है। सावधानी -इसको आंखों से दूर रखें।

महिलाओं का जैविक ग्रुप बनाया, कर रही आदर्श खेती

बड़वानी जिले के सबसे छोटे गांव बोरलाय की महिलाएं बड़ा काम कर दिखा रही हैं। यहां की महिलाओं ने जैविक ग्रुप बनाकर जैविक खेती की शुरूआत की है। 30 से अधिक महिलाएं मिलकर करीब 100 एकड़ में जैविक खेती कर मिसाल कायम कर रही हैं। एक से पांच एकड़ तक के खेतों में जैविक खेती के माध्यम से गेहूं, कपास व सब्जियों की फसलें ले रही है। जिला प्रशासन ने भी इन महिलाओं को सम्मानित किया है। अब ये महिलाएं बड़वानी के स्थापन दिवस पर स्टाल लगाकर जैविक खेती का प्रचार-प्रसार करेंगी। ये उद्यमीः महिलाएं जिले में आदर्श खेती को बढ़ावा दे रही हैं। ग्रुप की प्रमुख योगिता राजेश पाटीदार ने बताया कि उनके पति जैविक खेती करते हैं। उनका हाथ बंटाने के लिए वे भी जैविक खेती से जुड़ीं। गांव की अन्य महिलाओं ने जब यह देखा तो वे भी आगे आईं और सभी महिलाओं ने जैविक ग्रुप बनाया। पहले पांच महिलाओं ने शुरूआत की और अब करीब 30 महिलाएं जुड़ गई हैं।

जीरो बजट की है यह खेती - उद्यमी महिला कृषक योगिता ने बताया कि यह खेती जीरो बजट की होती है। पूरी तरह देशी गाय के गोबर व गोमूत्र पर आधारित इस खेती से बेहतर फसल मिलती है। साथ ही जैविक खाद डाली जाती है। इससे खेत की मिट्टी भी उपजाऊ होती है। यह पूरी तरह से पर्यावरण व मानव स्वास्थ्य हितैषी खेती है। ग्रुप की महिलाएं तीन से दस एकड़ तक खेतों में जैविक खेती कर रही हैं। जिला प्रशासन के आग्रह पर गौरव महोत्सव में स्टाल लगाकर अन्य लोगों को भी जैविक खेती की जानकारी देकर लाभ बताएंगी।

शहीद तो एक बार शहादत देता है, उसका परिवार वर्षों शहादत देता रहता है : मोहन नारायण

शहीद लांस नायक कन्हैयालाल जाट के परिजनों का किया सम्मान

जब हलछठ आती है सभी बच्चे अपने पिता को प्रणाम करते हैं तब पिता शहीद होता है। जब दीपावली-होली आती हैं तब मां शहादत देती हैं। जब करवा चौथ आती है तब पत्नी शहादत देती है। जब पेरेंट्स मीटिंग होती हैं नन्हे बच्चे जो यह भी नहीं समझते की शहादत क्या होती है अपने पिता को मीटिंग में ना देखकर शहादत देते हैं। रक्षाबंधन के रोज बहन हाथ में राखी को देखकर शहादत देती हैं। यह सिलसिला साल दो साल का नहीं...आजीवन चलता है। इस प्रकार शहीद तो एक बार ही शहादत देता है। लेकिन उसका परिवार बरसों बरस अनेक बार शहादत देता हैं।

यह विचार शहीद समरसता मिशन के संस्थापक मोहन नारायण ने व्यक्त किए। वे शहीद लांस नायक कन्हैयालाल जाट गुणावद के प्रथम शहीदी दिवस पर आयोजित कार्यक्रम व रूनिजा में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में बोल रहे थे। इस अवसर पर शहीद की प्रतिमा निर्माण के लिए वन चेक वन साइन फॉर शहीद मिशन का प्रारंभ किया। जिसके अंतर्गत शहीद की प्रतिमा निर्माण के लिए जन सहयोग से 11 लाख रूपए जुटाए जाएंगे। कार्यक्रम के प्रारंभ में शहीद के माता-पिता, वीरांगना पत्नी व शहीद की दो छोटी बिटियों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता नीलकंठ धाम के संस्कार ऋषि दिनेश व्यास ने की। संचालन प्रकाश गौड़ ने किया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्थित थे। रूनिजा रेलवे स्टेशन पर देश भक्ति के नारों व अमर शहीदों के जयकारों बीच पूजा विमल चावड़ा के नेतृत्व में नारायण का स्वागत युवाओं द्वारा किया गया। जिसमें सरपंच प्रतिनिधि कमलदास बैरागी, वरिष्ठ भाजपा नेता सुनील यादव, कांग्रेस के सुरेश चौहान, राधेश्याम खन्ना, राजेन्द्र भाबोर, कृष्ण डोडिया, आदि उपस्थित थे। उक्त जानकारी समरसता मिशन के सदस्य अशोक वैष्णव ने दी।

नंदी के शाप से हुआ था रावण का सर्वनाश, जानिए नंदी की महिमा

नंदी देव को भगवान शिव का गण माना जाता है। वे सदा शिवजी की सेवा में रहते हैं। पौराणिक मान्यता के अनुसार शिवजी की घोर तपस्या के बाद शिलाद ऋषि ने नंदी को पुत्र रूप में पाया था। शिलाद ऋषि ने अपने पुत्र नंदी को संपूर्ण वेदों का ज्ञान प्रदान किया। परंतु उनकी आयु कम थी। तब अल्पायु नंदी ने शिव की घोर तपस्या की। शिवजी प्रकट हुए और उन्होंने कहा वरदान मांग। तब नंदी ने कहा, मैं उम्रभर आपके सान्निध्य में रहना चाहता हूं। नंदी के समर्पण से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने नंदी को पहले अपने गले लगाया और उन्हें बैल का चेहरा देकर उन्हें अपने वाहन, अपना मित्र, अपने गणों में सर्वोत्तम के रूप में स्वीकार कर लिया।

नंदी का शाप - पौराणिक मान्यता के अनुसार एक बार भगवान शंकर से मिलने के लिए लंकापति रावण कैलाश पर्वत पहुंच गया। वहां उसका सामना सबसे पहले नंदीजी से हुआ क्योंकि वे शिव के गण और द्वारपाल थे। नंदीजी को देखकर रावण ने उनके स्वरूप की हंसी उड़ाई और उन्हें वानर के समान मुख वाला कहा। यह सुनकर नंदीजी क्रोधित हो गए और उन्होंने रावण को शाप दिया कि जा वानरों के कारण ही तेरा सर्वनाश होगा।

नंदी की महिमा - जिस तरह गायों में कामधेनु श्रेष्ठ है उसी तरह बैलों में नंदी श्रेष्ठ है। आमतौर पर खामोश रहने वाले बैल का चरित्र उत्तम और समर्पण भाव वाला बताया गया है। इसके अलावा वह बल और शक्ति का भी प्रतीक है। बैल को मोह-माया और भौतिक इच्छाओं से परे रहने वाला प्राणी भी माना जाता है। यह सीधा-साधा प्राणी जब क्रोधित होता है तो सिंह से भी भिड़ लेता है। यही सभी कारण रहे हैं जिसके कारण भगवान शिव ने बैल को अपना वाहन बनाया।

मालवा की ज्ञानवापी : भोजशाला

शुभम केवलिया

विक्रम संवत की ग्यारहवीं शताब्दी, सम्राट भोज की राजधानी धारानगरी (धार) की भोजशाला, जहाँ वेदों की ऋचाएं गूंजा करती थीं, बलुआ प्रस्तर से निर्मित वाग्देवी की प्रतिमा के दर्शन करने हिन्दू विभिन्न दिशाओं से आया करते थे। लेकिन कालांतर में हुए मुस्लिम आक्रमणों ने भोजशाला को कमाल मौला की मस्जिद में तब्दील कर दिया। आज हिन्दू समाज काशी और मथुरा के लिए संघर्षरत है, लेकिन भोजशाला कब ?

प्राचीन देवस्थान जो अपवित्र कर दिए गए हैं उन्हें प्राप्त करना तो हिन्दुओं का मौलिक अधिकार है, भोजशाला के संदर्भ में तो पुरातात्विक और अभिलेखीय साक्ष्य भी हमारा ही समर्थन करते है। आज ब्रिटिश संग्रहालय में माँ वाग्देवी की प्रतिमा भोजशाला से ही एक अंग्रेज अफसर द्वारा उन्नीसवीं शताब्दी में वहाँ उपहार स्वरुप पहुंचाई गई थी। प्रतिमा पर अंकित अभिलेख पर राजा भोज को सभी राजाओं का चंद्र कहा गया है तथा अभिलेख माँ वाग्देवी की प्राण-प्रतिष्ठा की भी बात करता है। स्पष्ट है, जब प्रतिमा भोजशाला से ही प्राप्त हुई है तो वह भोजशाला में ही तो प्रतिष्ठित थी इतना ही नहीं, भोजशाला के दो स्तम्भों पर अंकित ग्यारहवीं शताब्दी के अभिलेखों के विषय में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के पूर्व अधिकारी के.के. लेले का मत था की यह अभिलेख व्याकरण के शिक्षक द्वारा यहाँ अंकित करवाए गए थे जिनका भोजशाला में ज्ञानार्जन करने वाले विद्यार्थियों द्वारा उपयोग किया जाता था।

इन तथ्यों से यह स्पष्ट हो जाता है की मंदिर का विध्वंस कर यहाँ कोई नया ढाँचा बनवाया ही नहीं गया अपितु शिक्षा की केंद्र रही भोजशाला को ही मस्जिद में बदल हिन्दू आस्था के साथ खिलवाड़ किया गया। मालवा स्थित भोजशाला ही क्यों, उज्जैन की बिना नींव की मस्जिद भी तो इस्लामिक विध्वन्स की श्रंखला का एक हिस्सा है, इसी मस्जिद नुमा ढाँचे में लगे परमार कालीन मंदिरों के स्तम्भ, मंदिर के अधिष्ठान व अन्य भागों के प्रस्तर विध्वंस की कहानी कहते हैं ।यदि इस्लाम में दूसरे धर्म के पवित्र स्थान पर मस्जिद बनाना निषेध है तो भोजशाला और उज्जैन के परमार कालीन मंदिर को तोड़ बनी मस्जिद को हिन्दुओं को लौटाने में देरी क्यों ?

हिंदू युवती को मुस्लिम सोहेल की कैद से कराया आजाद

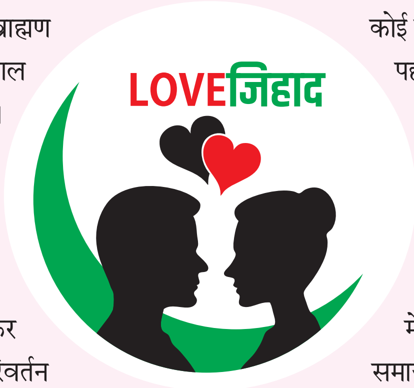

लव जिहाद का शिकार हुई इंदौर की ब्राह्मण युवती आखिरकार मुस्लिम युवके के चुंगल से 32 दिन बाद कल देर रात मुक्त हो गई। जनता कॉलोनी में रहने वाली इस युवती को चंदननगर का युवक सोहेल 28 अप्रैल को धोखा देकर अकोला (महाराष्ट्र) ले गया था और शादी कर प्रताड़ित कर रहा था। उसने मारपीट कर युवती के जेवर छीन लिए थे और धर्म परिवर्तन का दबाव बना रहा था। युवती ने कुछ दिन पहले अपनी मां को फोन पर पीड़ा बताई थी और कहा था कि वह वापस घर आना चाहती है। युवती के परिजन ने मामले में रूपए, जेवर, मूर्ति सहित बेटी के गायब होने की रिपोर्ट लिखाना चाही थी, लेकिन मल्हारगंज थाना पुलिस ने केवल गुमशुदगी का प्रकरण दर्ज किया था। एक महीने तक पुलिस ने कोई उल्लेखनीय कार्रवाई नहीं की तो तीन दिन पहले सर्व ब्राह्मण युवा परिषद ने पुलिस को चेतावनी देते हुए कहा था कि यदि युवती को वापस नहीं लाया गया तो समाज उग्र आंदोलन करेगा।

हिंदू समाज के लोग एक महीने से सतत युवती के परिवार और पुलिस के संपर्क में रहे लेकिन कोई परिणाम नही आया। समाज का आक्रोश बढ़ा तो पुलिस हरकत में आई और युवती को ढूंढ लिया।

समाज ने मांग की है कि दो अलग अलग धर्मों के युवक-युवतियों की विवाह की उम्र 25 की जाए। जिससे उनकी आपसी समझ विकसित हो जाए छोटी उम्र होने के कारण लड़कियां अपना अच्छा बुरा नहीं समझ पाती जिससे विधर्मी युवक उनको फंसाकर अपना उल्लू सीधा कर लेते है।

अमजद खान ने हिन्दू आदि गौरी बनकर युवती को प्रेम जाल में फंसाया

इन्दौर नगर में लव जिहाद का एक मामला सामने आया है। एक ट्रांसपोर्ट संचालक ने पंजाबी के रूप में परिचय देकर एक ब्यूटी पार्लर संचालिका से दुष्कर्म किया। राज खुलने पर मतांतरण करने का दबाव बनाया और लापता हो गया। युवती ढूंढते हुए आरोपित के घर पहुंच गई तो उसकी पत्नी, साले और मां ने बेरहमी से पीटा। हिंदू समाज की नाराजगी और मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, कलेक्टर, एसपी को ट्वीट करने के बाद पुलिस ने अमजद के खिलाफ दुष्कर्म और धार्मिक स्वतंत्रता और मतांतरण अधिनियम के तहत प्रकरण दर्ज कर लिया है। आरोपित फरार है।

मूलतः नीमच निवासी 25 वर्षीय पीड़िता महालक्ष्मी नगर में रहती हैं। डेढ़ साल पहले सहेली के माध्यम से आरोपित अमजद पुत्र राशिद खान निवासी इल्ला कॉलोनी से उसकी दोस्ती हुई थी। अमजद का ट्रांसपोर्ट का व्यवसाय है। आरोपित ने कहा कि उसका नाम आदि गौरी है और पंजाबी समाज से है। आरोपित उसके घर आने-जाने लगा। एक दिन उसने विवाह का झांसा देकर युवती से शारीरिक संबंध बना लिए। आरोपित युवती के घर पर ही रहने लगा था। एक दिन युवती ने अचानक पर्स देखा तो चौंक गई। उसके आधार कार्ड पर अमजद खान लिखा हुआ था। युवती के पूछने पर अमजद ने झूठ स्वीकार लिया और 4 मई को गाड़ी बेचने के बहाने लापता हो गया।

युवती ने खजराना थाने में गुमशुदगी दर्ज करवाई और उसको तलाशते हुए उसके घर पहुंच गई। वहां उसकी पत्नी परवीन बी, साले सलमान, रिजवान, वसीम, मां अंगूरी बी और चाचा मोहम्मद हमीद ने बेरहमी से पिटाई कर दी। पीड़िता ने दुष्कर्म की घटना बताई, लेकिन पुलिस ने प्रकरण दर्ज करने से इन्कार कर दिया। हिंदू समाज के जागरूक लोगों के ट्वीट करने के बाद एसपी ने लसूड़िया थाने से जानकारी मांगी और प्रकरण दर्ज करवाया।

श्रीमद् भागवत कथा में ढोल मांदल के साथ पहुंचे जनजाति समाज

बड़वानी जिले के निवाली नगर के समीपस्थ ग्राम गुमड़िया के नानीझरी के प्राकृतिक वातावरण में पंडित कमलकिशोर जी नागर के द्वारा श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन हो रहा है जिसमें जनजाति समाज जन पारंपरिक वेश भूषा में नजर आ रहे हैं। कथा में जनजाति समाज के प्रमुख वाद्य मांदल लाने को प्रोत्साहित किया जा रहा है। शनिवार को बड़ी संख्या में जनजाति समाज मांदल लेकर आए और पंडित कमल किशोर नागर जी के कथा के दौरान ढोल मांदल पर श्रद्धालु जमकर थिरके। क्षेत्र के रहने वाले जनजाति समाज के श्री कन्हैया लाल सिसौदिया ने बताया कि उक्त कथा में बड़ी संख्या में जनजाति समाज परिवार के साथ में सम्मिलित होकर कथा का श्रवण कर रहे हैं।

मध्य प्रदेश: सनातन धर्म में वापसी कर शेख जफर बने चैतन्य सिंह राजपूत, कहा- धर्म परिवर्तन नहीं किया, बल्कि अपने धर्म में की वापसी

मंदसौर एक मुस्लिम शख्स हिंदू धर्म से हुआ प्रभावित, हिंदू धर्म में आस्था के बाद भगवान पशुपतिनाथ मंदिर में किया धर्म परिवर्तन, मुंबई से आए महामंडलेश्वर चिदंबरानंद सरस्वती जी ने पत्रकार शेख जफर को विधि- विधान के साथ करवाएया हिंदू धर्म में प्रवेश, धर्म परिवर्तन के बाद शेख जफर बने चैतन्य सिंह राजपूत।

विवाद के बीच कुतुबमीनार परिसर में नमाज पर लगी रोक

एएसआइ ने नमाज पढ़ने वालों से मांगा था अनुमति पत्र, लेकिन नहीं दिखा पाए कोई दस्तावेज, चार दिन से नहीं हुई नमाज

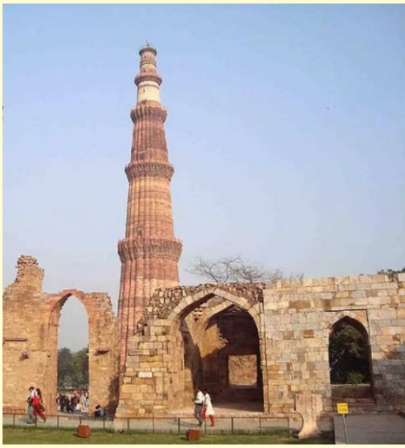

अब कुतुबमीनार परिसर में नमाज नहीं हो सकेगी। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआइ) ने कुतुबमीनार परिसर में नमाज पर प्रतिबंध लगा दिया है। पिछले चार दिन से नमाज पढ़ने वालों से अनुमति पत्र या इससे संबंधित अन्य कोई दस्तावेज मांगा था, जिस वे लोग नहीं दे पाए। इसके बाद यहां स्थित मुगलकालीन मस्जिद में नमाज पढ़ना बंद कराया गया है। इस मस्जिद के बगल में ही कुतुबमीनार और कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद है, इन्हें लेकर विवाद बढ़ने पर एएसआइ ने यह फैसला लिया है।

कुतुबमीनार के अस्तित्व को लेकर विवाद हो रहा है। पुरातत्वविदों और इतिहासकारों का एक वर्ग इसे चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के समय का यानी आज से करीब 1600 साल पहले का मान रहा है, जबकि दूसरा वर्ग कह रहा है कि इसे कुतुबद्दीन ऐबक ने 1192 में बनवाया था। वही सच्चाई का पता लगाने के लिए कुतुबमीनार परिसर में खोदाई कराने की खबरों पर केंद्रीय संस्कृति मंत्री जी किशन रेड्डी ने कहा कि ऐसी कोई योजना नहीं हैं।

कुतुबमीनार में सन् 2006 के करीब इंचार्ज रहे सेवानिवृत्त अधिकारी के. के. राजदान कहते हैं कि नमाज पढ़ने की अनुमति कब दी गई, यह जानकारी उन्हें नहीं है। इमाम के पास नमाज पढ़ने की अनुमति का कोई आदेश नहीं था। राजदान ने बताया कि उस समय मस्जिद में पांच से सात लोग नमाज पढ़ने आते थे, मगर धीरे-धीरे यह संख्या बढ़ गई।

आद्य संवाददाता नारद जी की जयंती मालवा प्रांत में मनाई

देवर्षि नारद जी की जयंती प्रतिवर्षानुसार ज्येष्ठ कृष्ण प्रतिपदा को आती है जिसे देशभर के संवाददाता गरिमामयी कार्यक्रम कर मनाते है और अपने आद्य संवाददाता के जीवन को आदर्श मानकर उनके कर्मो पर चलने की प्रेरणा लेते है चाहे कैसी भी परिस्थिति हो सच का साथ ना छोड़ना और समाजहित में, राष्ट्रहित में ही पत्रकारिता करने का ध्येय हो ऐसा संकल्प लेते है।

सोहन सिंह
ध्येय मंदिर के पुजारी
पुण्यतिथि : 4 जुलाई

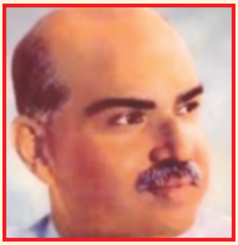

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी
महान शिक्षाविद् एवं चिंतक
जयंती : 6 जुलाई

महात्मा बाव
बहाई धर्म प्रवर्तक
शहीद दिवस : 9 जुलाई

गुरु हर किशन सिंह
सिखों के आठवें गुरु
जयंती : 7 जुलाई

डॉ. खूब चंद बघेल
स्वतंत्रता सेनानी एवं समाज सुधारक
जयंती : 19 जुलाई

वीर गुलाब सिंह लोधी
झंडा वाला पार्क के नायक
शहीद दिवस : 20 जुलाई

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक
अग्रणी नेता एवं क्रांतिकारी
जयंती : 23 जुलाई

चन्द्रशेखर आजाद
सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी
जयंती : 23 जुलाई

संत तुलसीदास
महान कवि
जयंती : श्रावण शुक्ल सप्तमी

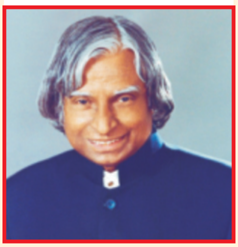

भारत रत्न डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम
सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक एवं पूर्व राष्ट्रपति
पुण्यतिथि : 27 जुलाई

भारत रत्न जे.आर.डी. टाटा
सुप्रसिद्ध उद्योगपति
पुण्यतिथि : 29 जुलाई

मुंशी प्रेमचन्द्र
कहानी सम्राट
जयंती : 31 जुलाई

जुलाई माह के मुख्य व्रत, त्यौहार एवं दिवस

ता. ०१ डॉक्टर्स एवं सी.ए. दिवस
ता. ०६ पं. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जयंती
ता. १० देवशयनी, हरिशयनी ग्यारस
ता. ११ विश्व जनसंख्या दिवस
ता. १८ श्रावण सोमवार
ता. २३ लोकमान्य तिलक जयंती
ता. २७ डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम पुण्यतिथि
ता. ३१ उधमसिंह शहीदी दिवस

बुक-पोस्ट
जाग्रत मालवा

प्रति,

स्वामी- विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11/डी, पोलोग्राउन्ड इन्दौर म.प्र. से मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जी-1, केसरदीप एवेन्यू इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक अरूण सपकाले फोन नं. 0731-3551341